

सारिणी- भागलपुर जिला में तीन सर्वश्रेष्ठ फसल पद्धति का उत्पादकता और लाभ सबसे अधिक पाया गया जो निम्नलिखित है:-

क्र. सं.	भागलपुर जिला के लिए तीन सर्वश्रेष्ठ फसल पद्धति	खरीफ		रबी		गरमा	
		उत्पादकता क्वि./हे.	लाभ (रूपये)	उत्पादकता क्वि./हे.	लाभ (रूपये)	उत्पादकता क्वि./हे.	लाभ (रूपये)
1.	धान- मक्का+ आलू	41.7	61,031	82.0+248.4	3,95,000	-	-
2.	धान-मक्का- खाली	39.8	56,884	117.2	1,94,948	-	-
3.	धान-गेहूँ-मूंग	42.0	61,686	40.8	60720	9.15	55106

सारिणी- भागलपुर जिला में विभिन्न फसलों में विभिन्न कृषि उपादानों का प्रभाव (% बदलाव) :-

विशिष्ट	धान	गेहूँ	मक्का	मसूर
उत्पादन	19.2	10.30	7.27	20.34
खेती की लागत/एकड़)	17.47	-14.34	-19.42	-12.13
शुद्ध आय/एकड़)	17.54	17.9	39.27	35.90
लाभ-लागत अनुपात (B:C)	17.92	28.8	38.17	36.95
बीज की आवश्यकता (किग्रा)	-31.58	-32.26	-18.18	-15.00
ईंधन की जरूरत (L)	-33.33	-19.23	41.18	-48.00
फसल की अवधि	-7.53	-2.94	0.67	-0.74
खाद (kg. N)	-2.44	-5.00	-13.64	0.00
तरल कीटनाशक (ml)	56.25	35.33	-37.50	300.00
जमीन की तैयारी	-52.95	-100.00	69.70	-100.00
फसल की स्थापना	-81.38	-37.50	-51.11	16.67
खादें	-21.73	22.16	-4.74	-7.37
खरपतवार नियंत्रण	52.04	-100.00	41.21	0.00
सिंचाई	-34.10	-24.73	-24.00	-18.75

भागलपुर जिला की जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम की उपलब्धियाँ



प्रकाशक सह संपादक

श्रीमती अनिता कुमारी

वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान
कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, भागलपुर

लेखक

डॉ० पंकज कुमार

विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभि०)
कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, भागलपुर
मो. : 91-9431257307

डॉ० पवन कुमार

विषय वस्तु विशेषज्ञ (कोट विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, सबौर, भागलपुर
मो. : 91-8299051744



कृषि विज्ञान केन्द्र, भागलपुर

बिहार कृषि विश्वविद्यालय,

सबौर - 813 210

ईमेल - bhagalpurkvk@gmail.com



नवीनतम कृषि फिल्मों को देखने के लिए
हमारा यूट्यूब चैनल को सब्सक्राइब करें

[/bausabour](https://www.youtube.com/channel/UCbausabour)

किसान हेल्प लाइन 1800 3456 455 (टोल फ्री)

बी.ए.यू. एग्रो डॉक्टर 700452883

आपका अपना रेडियो स्टेशन

Green 90.8 FM

अब मोबाइल पर उपलब्ध



भागलपुर जिला की जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम की उपलब्धियाँ

- जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम को भागलपुर जिला के गोरालीह प्रखंड के 5 गांव क्रमशः गोडरा, दामुचक, तरछा, कासिमपुर, लौगाय वित्तीय वर्ष 2019-2020 से 2023-2024 तक चलाया गया है।
- भागलपुर जिला में योजना अवधि के दौरान कुल 4120 एकड़ में जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम तकनीकों का प्रत्यक्षण कराया गया।
- जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत भागलपुर जिला में लगाई गई विभिन्न तकनीकों में 7-20% उपज में वृद्धि दर्ज की गयी जो कि सबसे अधिक मसूर (20%) तथा धान (22%) में प्राप्त की गई।
- इन तकनीकों के माध्यम से शुद्ध आय में भी (17-39%) तक बढ़त दर्ज की गयी जो कि सर्वाधिक मक्का में 39%, मसूर में 32%, तथा धान एवं गेहूं में 17% की वृद्धि मापी गयी। धान की फसल में अन्य फसलों की अपेक्षा सबसे कम लगभग 18% बढ़ोत्तरी दर्ज किया गया जो कि धान की सीधी बुआई में उगे अधिक खरपतवारों को नियंत्रित करने हेतु उपयोग किये गए खरपतवारनाशी तथा अन्य कृषि प्रयासों में लगने वाली लागत के कारण हुआ।
- परंपरागत कृषि पद्धतियों की अपेक्षा जलवायु एवं क्षेत्र के अनुसार उन्नत तकनीकों को अपनाने से कृषि लागत में 12-19% की कमी पाई गई। कृषि लागत में कमी का मुख्य कारण कृषि उपादान जैसे कि बीज में 15-32%, डीजल में 19-48%, नाइट्रोजन आधारित उर्वरक में >13% तथा अन्य उर्वरकों एवं उनके खेत में डालने की लागत में भी >22% की कमी दर्ज की गई।
- उत्पादन लागत कम होने का मुख्य कारण यह भी रहा कि नयी कृषि तकनीकों में जीरो टिलेज द्वारा गेहूं तथा मसूर की बुआई हेतु खेत की

तैयारी में लगने वाली लागत में 100% तथा धान में लगभग 53% की कमी मापी गयी किन्तु मक्का की फसल में यह लागत 69% अधिक मापी गयी क्योंकि पूर्व में किसान मक्का की फसल को जुताई करके बीज को खेत में ऐसे ही डाल देते थे जिससे बीज के जमाव व उपज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था परन्तु मेड़ पर मक्का लगाने से बीज का जमाव तथा उपज अधिक होती है साथ ही बरसात के जल जमाव के कारण फसल भी बर्बाद नहीं होती है।

- नयी पद्धति से फसल लगाने की बजह से बुवाई के दौरान लगने वाले खर्च में भी 37-81% की कमी दर्ज की गयी जो कि सबसे अधिक धान में 81%, मक्का में 51% तथा गेहूं में 37% तक की कमी आई है।
- धान की सीधी बुआई करने वजह से धान की अवधि में 10-12 दिनों की कमी आयी जिससे आगामी फसल की बुआई ससमय की जा सकी।
- परंपरागत कृषि पद्धतियों की अपेक्षा जीरो टिलेज विधि से बुआई करने के कारण विभिन्न फसलों में खरपतवारों की संख्या अधिक पायी गयी जिसे नियंत्रित करने हेतु धान में 56%, मक्का में 37%, गेहूं में 35% तथा मसूर में लगभग 3 गुणा खरपतवारनाशी का प्रयोग बढ़ गया किन्तु उपज पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया।
- जलवायु अनुकूल कृषि कार्यक्रम के अंतर्गत भागलपुर जिला में लगाई गई फसल पद्धति धान - मक्का+आलू सर्वश्रेष्ठ पाया गया। खरीफ धान में 41.7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर एवं रबी मक्का+आलू में 82.0+248.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उत्पादकता पाया गया जिससे कुल लाभ खरीफ धान में 61031.00 रुपये प्रति हेक्टेयर और रबी मक्का+आलू में 395000.00 रुपये प्रति हेक्टेयर पाया गया।

